हिंदी का उद्‌भव, विकास व स्वरूप

डॉ0 दलीप सिंह

भारत में प्रमुख रूप से आर्य परिवार एवं द्रविड परिवार की भाषाएं बोली जाती हैं। उत्तर भारत की भाषाएं आर्य परिवार की तथा दक्षिण भारत की भाषाएं द्रविड़ परिवार की हैं। उत्तर भारत की आर्य भाषाओं में संस्कृत सबसे प्राचीन है, जिसका प्राचीन रूप ऋग्वेद में मिलता है। इसी की उतराधिकारिणी हिंदी है।

हिंदी जिस भाषा धारा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है। भारत में उसका प्राचीनतम रूप संस्कृत है। संस्कृत कालीन बोलचाल की भाषा विकसित होते–होते 500 ई. पूर्व के बाद प्रवृतितः काफी बदल गयी, जिससे पाली की संज्ञा दी गयी है। इसका काल 500 ई. पूर्व से पहली ईंसवी तक है। बौद्ध ग्रंथों में पाली का जो रूप मिलता है, वह इस बोलचाल की भाषा का ही शिष्ट और मानक रूप था। खड़ी बोली हिंदी का उद्‌भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। किन्तु यदि हिंदी को पश्चिमी हिंदी और पूर्वी हिंदी की आठ बोलियों का प्रतिनिधि मानें तो उसका उद्‌भव शौरसेनी तथा अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ है। यदि उसे सत्रह बोलियों प्रतिनिधि मानें तो हिंदी का उद्‌भव शौरसेनी, अर्धमागधी तथा मागधी अपभ्रंश से हुआ है। यो तों हिंदी भाषा के व्याकरणिक रूप पालि में ही मिलने लगते है। प्राकृत काल में उनकी संख्या और बढ़ गयी किन्तु हिंदी भाषा का वास्तविक आरंभ 1000 ई0 से माना जाता है।